

ZULM KA ANJAAM (Gujarati)

તત્કાલીન પુસ્તક



શિખર-૨૭૪

ઝુલ્મ કા અન્જામ

શૈખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત બાલિયે દા'વતે ઉસ્લામી હાઝરત અલવામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્લાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી محمّد ابراهيم العطار

- | | |
|--|---|
| પરાયા ગેરુ કા દાના તોડને કા ઉખરી નુકસાન 12 | ✿ અદાબે કર્ઝ મેં બિલા વજહ તાબીર ગુનાહ હે 15 |
| હમ શરીફ કે સાથ શરીફ ઔર.... 26 | ✿ બિનીર ઈજ્જત કિસી કી અપ્પલ પહનના કેસા ? 29 |
| મઝલૂમ કી ઇમદાદ કરના ઝરૂરી હે 41 | ✿ મુખ્તલિફ હુકૂક સીખને કા તરીકા 46 |

مكتبة المدينة

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

ગુલમ કા અન્જામ¹

શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ યેહ રિસાલા

(72 સફહાત) મુકમ્મલ પઠ લીજિયે اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ખૌફે ખુદા

عَزَّوَجَلَّ سے રો પરંગે.

મોતિયોં વાલા તાજ

“અલ કૌલુલ બદીઅ” મેં હૈ : હઝરતે સચ્ચિદ્નાશૈખ

અહમદ બિન મન્સૂર عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُورُ કો બા’દે વફાત કિસી ને

ખ્વાબ મેં ઈસ હાલ મેં દેખા કે વોહ જન્નતી હુલ્લા (લિબાસ)

ઝૈબે તન કિયે મોતિયોં વાલા તાજ સર પર સજાએ “શીરાજ”

કી જામેઅ મસ્જિદ કી મેહરાબ મેં ખડે હૈં, ખ્વાબ દેખને વાલે

ને પૂછા : مَا فَكَّرَ اللّٰهُ بِكَ؟ યા’ની અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ને આપ કે

યેહ બયાન અમીરે અહલે સુન્નત اَمَامَاتِ بَرَكَاتِهِمُ الْاَقْبَامِيَّةِ ને તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક “દા’વતે ઈસ્લામી” કે ત્રીન રોઝા બૈનલ અક્વામી સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ (સિ. 1429,2008) મેં સહરાએ મદીના મુલતાન મેં ફરમાયા. ઝરૂરી તરમીમ કે સાથ તહરીરન હાઝિરે બિદમત હૈ.

મજલિસે મક-ત-બતુલ મદીના

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिस के पास मेरा ठिक हुवा और उसने मुझ पर दुर्रदे पाक न पण्डा तहकीक वोह बढे अप्त हो गया.

साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? कडा : **عَزَّ وَجَلَّ** ने मुझे बपश दिया, मेरा ईकराम इरमाया और मोतियों वाला ताज पहना कर दाभिले जन्नत किया. पूछा : किस सबब से ? इरमाया **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** में महुबुबे रब्बुल अनाम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुर्रदे सलाम पढा करता था येही अमल काम आ गया. (अल कौलुल बदीअ, स. 254)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भौइनाक डाकू

शैख अब्दुल्लाह शाईई **رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي** अपने सइर नामे में लिखते हैं : अक बार मैं शहरे बसरा से अक करिया (या'नी गाँ) की तरफ़ जा रहा था. दो पहर के वक्त यकायक अक भौइनाक डाकू हम पर हम्ला आवर हुवा, मेरे रईक (या'नी साथी) को उस ने शहीद कर डाला, हमारा माल व मताअ छीन कर मेरे दोनों² हाथ रस्सी से बांधे, मुझे जमीन पर डाला और इरार हो गया. मैं ने जूं तूं हाथ भोले और यल पडा मगर परेशानी के आलम में

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله فقل عليه وسلم जिसने मुज पर अेक दुइरे पाक पण्डा अल्लाह तआला उस पर दस रहुमते बेजता है.

रास्ता भूल गया, यहाँ तक के रात आ गई. अेक तरफ़ आग की रोशनी देख कर मैं उसी समत यल दिया, कुछ देर यलने के बा'द मुझे अेक जैमा नजर आया, मैं शिदते प्यास से निढाल हो चुका था, लिहाजा जैमे के दरवाजे पर ખડे हो कर मैं ने सदा लगाई : ! الْعَطْشُ! الْعَطْشُ! या'नी "हाअे प्यास ! हाअे प्यास !" छत्तिझाक से वोह जैमा उसी षौङ्नाक डाकू का था ! मेरी पुकार सुन कर बज्जअे पानी के नंगी तलवार लिये वोह बाहर निकला और याहा के अेक ही वार में मेरा काम तमाम कर दे, उस की बीवी आडे आई मगर वोह न माना और मुझे घसीटता हुवा दूर जंगल में ले आया और मेरे सीने पर यढ गया मेरे गले पर तलवार रख कर मुझे जब्द करने ही वाला था के यकायक आडियों की तरफ़ से अेक शेर दहाडता हुवा भर आमद हुवा, शेर को देख कर षौङ् के मारे डाकू दूर जा गिरा, शेर ने जपट कर उसे थीर झाड डाला और आडियों में गाईब हो गया. मैं इस गैबी छमदाद पर षुद्धا عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बज्ज लाया.

सय हें के बुरे काम का अन्जाम बुरा हें

ફરમાને મુસ્તફા: طي الله فاني ظلموا لله وسلم जिसने मुज पर सौ मर्तबा दुइटे पाक पण्डा अल्लाह तआला (उस पर सौ रलुमते नाजिल फरमाता है.

जालिम को मोहलत मिलती है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! देखा आप ने? जुल्म का अन्जाम किस कदर भयानक है. उठरते सय्यिदुनाशैफ मुहम्मद बिन ईस्माईल बुखारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي “सहीह बुखारी” में नकल करते हैं: उठरते सय्यिदुना अबू मूसा अश्शरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया: बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जालिम को मोहलत देता है यहां तक के जब उस को अपनी पकड में लेता है तो फिर नहीं छोडता. येह फरमा कर सरकारे नामदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पारह 12 सूरअे हूद की आयत 102 तिलावत फरमाई:

كذالك أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ أَن يَقُولُوا إِذَا أَدَّيْتُمُ الْمَالَ فِي قُلُوبِكُمْ لَتُرَوَّيْنَهُ بِالرِّبَا أضعف وأضعف
 तर-ज-मअे क-जुल ईमान: और
 औसी ही पकड है तेरे रब (عَزَّ وَجَلَّ)
 की जब बस्तियों को पकडता है
 उन के जुल्म पर. बेशक उसकी
 पकड दईनाक करी है.

(सहीहबुखारी, जि. 3, स. 247, हदीस: 4686)

फ़रमाने मुस्तफ़ा: *على الله قتل عليه وسلم* तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुर्रद पण्डो तुम्हारा दुर्रद मुझ तक पहुँचता है.

दहशत गर्दों, लुटेरों, कत्लो गारत गरी का बाज़ार गर्म करने वालों को बयान कर्दा हिकायत से ष्ब्रत हासिल करनी चाहिये, उन्हें अपने अन्जाम से बे खबर नहीं रहना चाहिये के जब दुन्या में भी कहर की बिजली गिरती है तो इस तरह के जालिम लोग कुत्ते की मौत मारे जाते हैं और उन पर द्रो² आंसू बहाने वाला भी कोई नहीं होता और आह ! आखिरत की सज़ा कौन बरदाश्त कर सकता है ! यकीनन लोगों पर जुल्म करना गुनाह, दुन्या व आखिरत की बरबादी का सबब और अज़ाबे जहन्नम का बाँधस है. इस में अल्लाह व रसूल *عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ* की ना इरमानी भी है और बन्दों की हक त-लफ़ी भी. हज़रते जुरजानी *قَدَسَ سِرُّهُ النُّورَانِي* अपनी किताब “अत्ता’रीफ़ात” में जुल्म के मा’ना बयान करते हुअे लिखते हैं : किसी चीज़ को उस की जगह के ष्वावा कही और रचना. (अत्ता’रीफ़ात विल जुरजानी, स. 102) शरीअत में जुल्म से मुराद येह है के किसी का हक मारना, किसी को गैर महल में खर्च करना, किसी को बिगैर कुसूर के सज़ा देना. (भिरआत, जि. 6, स. 669) जिस भौफ़नाक डाकू का अभी आप ने तज़किरा समाअत इरमाया, वोह लूट मार की खातिर कत्ले ना हक भी

करमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى وسلم जिसने मुज पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुरदे पाक पण्डा उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रातत मिलेगी.

करता था, दुन्या ही में उस ने जुल्म का अन्जाम देष लिया. न जाने अब उस की कब्र में क्या हो रहा होगा ! नीज क्रियामत का मुआ-मला अभी बाकी है. आज भी डाकू उभूमन माल के लालच में कत्ल भी कर डालते हैं. याद रखिये ! कत्ले ना हक ईन्तिहाई भयानक जुर्म है.

औंधे मुंड जहन्नम में

उज्जरते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ईसा तिरमिजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي अपने मशहूर मजमूअअे अहादीस “तिरमिजी” में उज्जरते सय्यिदुना अबू सईद जुदरी व अबू हुदैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से नकल करते हैं: “अगर तमाम आस्मान व जमीन वाले अेक मुसल्मान का पून करने में शरीक हो जाअें तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन सभों को मुंड के बल औंधा कर के जहन्नम में डाल देगा.” (सु-ननुत्तिरमिजी, जि.

3, स. 100, हदीस : 1403, दारुल इंक बैरूत)

आग की बेडियां

लोगों का माले ना हक दबा लेने वालों, उकेतियां करने वालों, चिह्नियां भेज कर रकमों का मुता-लबा करने वालों को पूब गौर कर लेना याहिये के आज जो माले हराम ब आसानी गले से नीचे उतरता हुवा मडसूस हो रहा है वोह बरोजे

इरमाने मुस्तफी: على الله تعالى وهو يعلم जिसने किताब में मुज पर दुइदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस किताब में लिखा रहेगा फिरिश्ते उसके लिये इस्तिगफार करते रहेंगे.

ने इस्तिफसार इरमाया : क्या तुम जानते हो मुइलिस कौन है ? सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : या रसूलव्वाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हों वोह मुइलिस है. इरमाया : “मेरी उम्मत में मुइलिस वोह है जो कियामत के दिन नमाज, रोजे और जकात ले कर आया और यूं आया के इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल ज्वाया, उस का जून बहाया, उसे मारा तो उस की नेकियों में से कुछ इस मजलूम को दे दी जअें और कुछ उस मजलूम को फिर अगर इस के जिम्मे जो हुकूक थे उन की अदाअेगी से पहले इस की नेकियां जत्म हो जअें तो उन मजलूमों की जताअें ले कर उस जालिम पर डाल दी जअें फिर उसे आग में डेंक दिया जअे.”
(सहीह मुस्लिम, स. 1394, हदीस : 2581, दारो इब्ने हजम बैरत)

लरज उठो !

अै नमाजियो ! अै रोजादारो ! अै डाजियो ! अै पूरी जकात अदा करने वालो ! अै जैरात व ह-सनात में हिस्सा लेने वालो ! अै नेक सूरत नजर आने वाले मालदारो ! उर

इरमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه واله وسلم मुज पर कसरत से दुइरे पाक पण्डो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइरे पाक पण्डना तुम्हारे गुनाहों के लिये भङ्गिरत है.

जाओ ! लरज उठो ! हकीकत में मुइलिस वोह है जो नमाज, रोजा, हज, जकात व स-दकात, सभावतों, इलाही कामों और बडी बडी नेकियों के बा वुजूह कियामत में ખाली का ખाली रह जाओ ! जिन को कभी गाली दे कर, कभी बिला इज्जते शर-ई उंट कर, बे इज्जती कर के, जलील कर के, मारपीट कर के, आरियतन थीजें ले कर कस्दन वापस न लौटा कर, कर्ज दबा कर, दिल् दुखा कर नाराज कर दिया डोगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाअेंगे और नेकियां अत्म डो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का भोज उठा कर वासिले जहन्नम कर दिया जाओगा.

“सहीह मुस्लिम शरीफ़” में है, अद्लाह के महबूब, दानाओ गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इब्रत निशान है : “तुम लोग हुकूक, हक वालों के सिपुई कर डोगे हत्ता के बे सींग वाली का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाओगा.”

(सहीह मुस्लिम, स. 1394, हदीस : 2582)

मत्लब येह के अगर तुम ने दुन्या में लोगों के हुकूक

करमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه والسلام जो मुज़ा पर एक मर्तबा दुःख शरीफ़ पण्डता है अल्लाह तआला उसके लिये
 एक कीरात अज्र लिखता है और एक कीरात हुद पछाण जितना है.

अदा न किये तो ला मलाला (या'नी हर सूरत में) क्रियामत में अदा करोगे, यहाँ दुन्या में माल से और आभिरत में आ'माल से, लिहाज़ा बेहतरी ईसी में है के दुन्या ही में अदा कर दो वरना पछताना पड़ेगा. "भिरआत शर्हें भिशकात" में है: "जानवर अगर्ये शर-ई अहकाम के मुकल्लफ़ नही हैं मगर हुकूकुल ईबाद जानवरों कोभी अदा करने होंगे." (भिरआत, जि. 6, स. 674) अल्लाह جَزَّوَجَلَّ का पौर्फ़ रफने वाले हज़रात हुकूकुल ईबाद के ब जाहिर मा'मूली नज़र आने वाले मुआ-मलात में भी औसी अहतियात करते हैं के हैरत में डाल देते हैं. युनान्ये

आधा सेब

हज़रते सय्यिदुना ईब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक बाग के अन्दर नहर में सेब देखा, उठाया और खा लिया. खाते तो खा लिया मगर फिर परेशान हो गये के येह मैं ने क्या किया ! मैं ने ईस के मालिक की ईजाज़त के बिगैर क्यूं खाया ! युनान्ये तलाशते हुअे बाग तक पड़ोये, बाग की मालिका एक प्तातून थीं, उन से आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मा'ज़िरत तलब इरमाई, उस ने अर्ज़ की : येह बाग मेरा और बादशाह का मुश्तरिका है, मैं अपना

ફરમાને મુસ્તફા: ﷺ: عَلَى اللَّهِ فَاتَى عَلَيْهِ وَوَالِهِ وَسَلَّمَ: મુઝ પર દુરુદે શરીફ પછો અલ્લાહ તુમ પર રહમત ભેજેગા.

હક મુઆફ કરતી હૂં લેકિન બાદશાહ કા હક મુઆફ કરને કી મજાઝ નહીં. બાદશાહ બલખ મેં થા લિહાઝા સચ્ચિદુના ઈબ્રાહીમ બિન અદહમ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आधा सेब मुआफ़ करवाने के लिये बलख का सफ़र इफ्तियार किया और मुआफ़ करवा कर ही दम लिया. (رحلة ابن بطوطة ج ۱ ص ۳۴)

ખિલાલ કા વબાલ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો! ઈસ હિકાયત મેં બિગૈર પૂછે દૂસરોં કી ચીઝેં હડપ કર જાને વાલોં, સજ્જિયોં ઓર ફલોં કી રેઢિયોં સે ચુપચાપ કુછ ન કુછ ઉઠા કર અપની ટોકરી મેં ડાલ લેને વાલોં કે લિયે ઈબ્રત હી ઈબ્રત હૈ. બ ઝાહિર મા'મૂલી નઝર આને વાલી શૈ ભી અગર બિગૈર ઈજાઝત ઈસ્તિ'માલ કર ડાલી ઓર કિયામત કે રોઝ પકડે ગએ તો ક્યા બનેગા? યુનાન્યે હઝરતે અલ્લામા અબ્દુલ વહ્હાબ શા'રાની قُدَس سِرُّهُ التُّورَانِ “તમ્બીહુલ મુગ્તરીન” મેં નક્લ કરતે હૈં: મશહૂર તાબેઈ બુઝુર્ગ હઝરતે સચ્ચિદુનાવહ્હબ બિન મુનબ્બેહ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં: એક ઈસ્રાઈલી શખ્સ ને અપને પિછલે તમામ ગુનાહોં સે તૌબા કી, સત્તર સાલ લગાતાર ઈસ તરહ ઈબાદત કરતા રહા કે દિન કો

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه والى وسلم जब तुम मुर्सलीन-النظام عليه السلام पर दुइटे पाक पण्डो तो मुज पर भी पण्डो
 बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ.

रोज़ा रफ़ता और रात को जाग कर एबादत करता, न कोई उम्दा गिज़ा खाता न किसी साअे के नीचे आराम करता. उस के एन्तिकाल के बा'द किसी ने ज्वाब में टेष कर पूछा :
 ؟ كَلَّ اللهُ بِكَ يا'नी अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? ज्वाब दिया : “अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा हिसाब लिया, इर सारे गुनाह बपश दिये मगर अेक लकडी जिस से मैं ने उस के मालिक की एज्जत के बिगैर दांतों में पिलाल कर लिया था (और येह मुआ-मला हुकूकुल एबाद का था) और वोह मुआइ करवाना रह गया था एसी की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूँ.”

(तम्भीहुल मुत्तरीन, स. 51, दारुल मा'रिइल बैरुत)

गेहूँ का दाना तोडने का उप्परी नुकसान

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! जरा गौर तो कीजिये ! अेक तिन्का जन्नत में दापिले से मानेअ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'मूली लकडी के पिलाल की तो बात ही कहां है. बा'ज लोग दूसरों के लाभों बल्के करोड़ों रुपै हउप कर जाते हैं और उकार तक नहीं लेते. अद्लाह عَزَّوَجَلَّ इदिायत एनायत इरमाअे. आमीन. अेक

करमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه واله وسلم जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सौ बार दुर्रदे पाक पण्डा उसके दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे.

और एभ्रतनाक हिकायत मुला-हजा इरमाएये जिस में सिर्फ़ एक गेहूँ के दाने के बिला एज्जत खाने के नहीं सिर्फ़ तोड डालने के उभरवी नुकसान का तजक़िरा है. युनान्ये मन्कूल है के एक शप्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख्वाभ में देख कर पूछा : عَزَّوَجَلَّ اللهُ بِكَ يَا'नी अद्लाह ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? कहा : अद्लाह ने मुझे बप्श दिया, लेकिन हिसाब व किताब हुवा यहाँ तक के उस दिन के बारे में भी मुज से पूछगए हूँ जिस रोज़ मैं रोजे से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब एइतार का वक्त हुवा तो मैं ने गेहूँ की एक बोरी में से गेहूँ का एक दाना उठा लिया और उस को तोड कर खाना ही खाहता था के एक दम मुझे अहसास हुवा के येह दाना मेरा नहीं, युनान्ये मैं ने उसे जहाँ से उठाया था इरन उसी जगह डाल दिया. और एस का भी हिसाब लिया गया यहाँ तक के उस पराअे गेहूँ के तोडे जाने के नुकसान के ब कदर मेरी नेकियां मुज से ली गईं.

(मिरक़ातुल मफ़ातीह, जि. 8, स. 811, तहत्तुल हदीस : 5083)

करमाने मुस्तकः: على الله تعالى فله والى وسلم जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा में क्रियामत के दिन उसकी शफाअत करेगा.

सात सो षा जमाअत नमाजे

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! अेक पराया गेहूं बिगैर ईजाजत तोड देना भी नुकसाने क्रियामत का सबब हो सकता है. अब सिर्फ गेहूं का दाना तोडने या षा जाने ही की कहां बात है. आज कल कई लोग बिगैर द्दा'वत के दूसरों के यहां जाना ही षा डालते हैं ! डालांके बिगैर बुलाअे किसी की द्दा'वत में घुस जाना शरअन मन्अ है. अबू द्दावूद शरीफ की हदीसे पाक में येह भी है : "जो बिगैर बुलाअे गया वोह योर हो कर घुसा और गारत गरी कर के निकला." (सु-ननो अभी द्दावूद, जि. 3, स. 379, हदीस : 3741) नीज आज कल कई के नाम पर लोगों के हजारों बढके लाभों रुपै हउप कर लिये जाते हैं. अभी तो येह सब आसान लग रहा होगा लेकिन क्रियामत में बडोत मडंगा पड जाअेगा. अै लोगों का कई द्दावा लेने वालो ! कान षोल कर सुनो ! मेरे आका आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ نकल करते हैं : "जो दुन्या में किसी के तकरीबन तीन³ पैसे दैन (या'नी कई) द्दावा लेगा बरोजे क्रियामत ईस के बढले

करमाने मुस्तफ़ा: على الله فضل عليه وآله وسلم उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज परदुइदे पाक न पण्डे.

सातसो⁷⁰⁰ बा जमाअत नमाजें देनी पउ जाअेंगी.” (इतावा र-अविय्या, जि. 25, स. 69) छुं हां ! जो किसी का कर्जा दबा ले वोह जालिम है और सप्त नुकसान व पुस्सान में है. उजरते सय्यिदुनासुलैमान त-बरानी كَذَسَّ سُوءُ التُّورَانِ अपने मजमूअअे उदीस, “त-बरानी” में नकल करते हैं : सरकारे मदीनअे मुनव्वरउ, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया, जिस का मइडूम है : “जालिम की नेकियां मजलूम को, मजलूम के गुनाह जालिम को दिलावाअे जाअेंगे.” (अल मो'जमुल कबीर, जि. 4, स. 148, उदीस : 3969, दारो अेडयाईतुरासिल अ-रबी बैइत)

अदाअे कर्ज में बिला वजह ताभीर गुनाह है

कर्ज की बात यली है तो येह भी बताता यलूं के छुज्जतुल ईस्लाम उजरते सय्यिदुनाईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ك्रीमियाअे सआदत में नकल करते हैं : “जो शप्स कर्ज लेता है और येह नियत करता है के मैं अख्शी तरह अदा कर दूंगा तो अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की डिफ़ाजत के लिये यन्द इरिश्ते मुकर्रर इरमा देता है और वोह दुआ करते हैं के ईस का कर्ज अदा हो जाअे.” (उन्जुर : ईत्तिहाइस्सादह लिज्जुबैदी, जि. 6, स. 409, दारुल कुतुबुल ईल्मिय्या बैइत)

करमाने मुस्तफ़ा: على الله فضل عليه وآله وسلم जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ़ न पढे तो लोगो में वोह कन्जूस तरीन शम्स है.

और अगर कर्ज़दार कर्ज़ अदा कर सकता हो तो कर्ज़ प्वाह की मरज़ी के बिगैर अेक घडी त्बर त्मी ताप्पीर करेगा तो गुनहगार होग़ा और ज़ादिम करार पायेगा. प्वाह रोजे की हालत में हो या सो रह़ा हो उस के जिम्मे गुनाह लिखा ज़ाता रहेगा. (गोया हर हाल में गुनाह का मीटर चलता रहेगा) और हर सूरत में उस पर अल्वाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत पडती रहेगी. येह गुनाह तो अैसा है के नी'द की हालत में त्मी उस के साथ रहता है. अगर अपना सामान बेय कर कर्ज़ अदा कर सकता है तब त्मी करना पडेगा, अगर अैसा नहीं करेगा तो गुनहगार है. अगर कर्ज़ के बढले अैसी यीज़ दे ज़ो कर्ज़ प्वाह को ना पसन्द हो तब त्मी देने वाला गुनहगार होग़ा और ज़ब तक उसे राज़ी नहीं करेगा एंस जुल्म के जुर्म से नज़ात नहीं पायेगा क्यूंके उस का येह ई'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग एंसे मा'भूली ખयाल करते हैं." (क़ीमियाअे सआदत, ज़ि. 1, स. 336)

गैरत मन्दी का तकाज़ा

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! जब मत्लब होता है

फ़रमाने मुस्तफ़ा: صلى الله عليه وآله وسلم जिस के पास मेरा ठिक छो और उसने दुरुद शरीफ़ न पण्डा उसने जफ़ा की.

तो भुशामद और जूटे वा'दे कर के बा'ज लोग कर्ज़ा हासिल कर लेते हैं मगर अइसोस सद करोड अइसोस ! ले लेने के बा'द अदा करने का नाम नहीं लेते. गैरत मन्दी का तकाजा तो येह है के जिस से कर्ज़ लिया है अपने उस मोहसिन के घर जल्द तर जा कर शुक्रिया के साथ कर्ज़ अदा कर आते, मगर आज कल हालत येह है के अगर कर्ज़ अदा करना भी है तो कर्ज़ प्वाह को भूब धक्के षिला कर, रुला रुला कर उस बेयारे की रकम को तोड झोड कर या'नी थोड़ी थोड़ी कर के कर्ज़ लौटाया जाता है. याद रभिये ! षिला वजह कर्ज़ प्वाह को धक्के षिलाना भी जुल्म है. आम तौर पर ब्योपारियों की आदत होती है के रकम गल्ले में मौजूद होने के बा वुजूद शाम को ले जाना, कल आना वगैरा कल कर षिला षज्जते शर-ई टरभाते, टहलाते और धक्के षिलाते हैं, येह नहीं सोचते के हम कितना बडा वबाल अपने सर ले रहे हैं ! अगर शाम को कर्ज़ युकाना ही है तो अभी सुबह के वक्त युका देने में हरज ही क्या है !

नेकियों के जरीअे मालदार

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बन्दों की हक त-लफ़ी

करमाने मुस्तफा: على الله فقلبي لله والله وسلم उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह दुरदे पाक न पछे.

आभिरत के लिये बहोत जियादा नुकसान देल है, उजरते सय्यिदुना अहमद बिन हर्ब عليه رضى الله عنه इरमाते हैं: कर्छ लोग नेकियों की कसीर दौलत लिये दुन्या से मालदार रुपसत होंगे मगर बन्दों की हक त-लफ़ियों के बाईस क्रियामत के दिन अपनी सारी नेकियां ओ बैठेंगे और यूं गरीब व नादार हो जाअेंगे. (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स. 53, दारुल मा'रिफ़ल बैरत)

उजरते सय्यिदुना शैफ अबू तालिब बिन अली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي “क़तुल कुलूब” में इरमाते हैं: “जियादा तर (अपने नहीं बल्के) दूसरों के गुनाह ही दोज़्म में दाखिले का बाईस होंगे जो (हुक्कुल ईबाद तलफ़ करने के सबब) ईन्सान पर डाल दिये जाअेंगे. नीज़ बे शुमार अफ़राद (अपनी नेकियों के सबब नहीं बल्के) दूसरों की नेकियां हासिल कर के जन्नत में दाखिल हो जाअेंगे.” (क़तुल कुलूब, जि. 2, स. 292) ज़ाहिर है दूसरों की नेकियां हासिल करने वाले वोही होंगे जिन की दुन्या में हिल आज़ारियां और हक त-लफ़ियां हुई होंगी. यूं बरोजे क्रियामत मजलूम और दुखियारे झाअेदे में रहेंगे.

फ़रमाने मुस्ताफ़ा: **عَلَى اللَّهِ قَوْلُهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुर्वद न पण्डे तो लोगों में वोह क्यूँस तरीन शप्स है.

अल्लाह व रसूल **عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को धजा देने वाला

हुकुल धबाद का मुआ-मला बडा नाजुक है मगर आह !

आज कल बे बाकी का दौर दौरा है, अवाम तो कुशा भवास कडलाने वाले भी उमूमन धस की तरफ़ से गाड़िल रहते हैं. गुस्से का मरज आम है धस की वजह से अकसर “भवस” भी लोगों की दिल् आज़ारी कर बैठते हैं और धस की तरफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं छोती के किसी मुसल्मान की बिला वजहे शर-ध दिल् आज़ारी गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. मेरे आका आ'ला उजरत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इतावा र-अविय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़हा 342 में त-बरानी शरीफ़ के उवाले से नकल करते हैं: **سُئِلَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का इरमाने धध्रत निशान है: **مَنْ أَدَى مُسْلِمًا فَقَدْ أَدَانِي وَمَنْ أَدَانِي فَقَدْ أَدَى اللَّهَ**: (या'नी) जिस ने (बिला वजहे शर-ध) किसी मुसल्मान को धजा दी उस ने मुझे धजा दी और जिस ने मुझे धजा दी उस ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को धजा दी.” (अल मो'जमुल औसत, जि. 2, स. 387, उदीस : 3607) **अल्लाह व रसूल **عَزَّوَجَلَّ** وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को धजा देने वालों के बारे में

करमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه واليه وسلم जिस के पास मेरा जिक्र हो और उसने दुश्मद शरीक न पण्डा उसने जका की.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारल 22 सू-रतुल अल्लाज्ज आयत 57 में एशाद करमाता है :

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ तर-ज-मअे क-जुल एमान : भेशक
وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا जो एजा देते हैं अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ)
وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُم और उस के रसूल को उन पर
عَذَابًا مُهِينًا ⑤ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की ला'नत है
 दुन्या व आभिरत में और अल्लाह
 (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के लिये जिल्लत का
 अजाज तय्यार कर रखा है.

दिल छिला देने वाली पारिश

प्यारे प्यारे एस्लामी भाएयो ! अगर आप कभी किसी मुसल्मान की बिला वजहे शर-ए दिल आजारी कर बैठे हैं तो आप का याहे उस से कैसा डी करीबी रिश्ता है, बडे भाए हैं, वालिद हैं, शोहर हैं, सुसर हैं या कितने डी बडे रुत्बे के मालिक हैं, याहे सदर हैं या वजीर हैं, उस्ताज हैं या पीर हैं, या मुअज्जिन हैं या एमान व ખतीब हैं जो

इरमाने मुस्ताफ़ा: صلى الله عليه وآله وسلم जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उसने मुझ पर दुर्दे पाक न पण्डा तलकीक वोड बढ भप्त हो गया.

कुछ भी हैं बिगैर शरमाये तौबा कीजिये और उस बन्दे से मुआफ़ी मांग कर उस को राजी कर लीजिये वरना जहन्नम का डोलनाक अजाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा. सुनो ! सुनो !

उज्रते सय्यिदुना यजीद बिन श-जरह عليه السلام इरमाते हैं : जिस तरह समुन्दर के कनारे होते हैं वसी तरह जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुप्ती उंटों जैसे सांप और भय्यरों जैसे बिच्छू रहते हैं. अहले जहन्नम जब अजाब में कभी के लिये इरियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोड जूं ही निकलेंगे तो वोड सांप उन्हें डोंटों और येडरों से पकड लेंगे और उन की भाल तक उतार लेंगे वोड लोग वहां से बयने के लिये आग की तरफ़ भागेंगे फिर उन पर जुजली मुसल्लत कर दी जायेगी वोड वस कदर जुजायेंगे के उन का गोशत पोस्त सब जड जायेगा और सिर्फ़ डडियां रह जायेंगी, पुकार पडेगी : “अै कुलां ! क्या तुजे तकलीफ़ हो रही है ?” वोड कहेगा : हां. तो कडा जायेगा “येड उस वजा का बढला है जो तू भोमिनों को दिया करता था.” (अत्तरगीब वत्तरहीब, जि. 4, स. 280, उदीस : 5649, दारुल इक़ बैरत)

ફરમાને મુસ્તફા: ﷺ જિસને મુઝ પર એક બાર દુરૂદે પાક પઘલા અલ્લાહ તઆલા ઉસ પર દસ રહૂમતે ભેજતા હૈ.

જન્નત મેં ઘૂમને વાલા

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! મુસલમાન કો ઈઝા દેના મુસલમાન કા કામ નહીં બલકે ઉસ કા કામ તો યેહ હૈ કે મુસલમાન સે ઈઝા દેને વાલી ચીઝેં દૂર કરે. સચ્ચિદુના ઈમામ મુસ્લિમ બિન હજજાજ કુશૈરી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي سહીહ મુસ્લિમ મેં નક્લ કરતે હૈં : તાજદારે મદીના, કરારે કલ્બો સીના, ફૈઝ ગન્જના, સાહિબે મુઅત્તર પસીના, બાઈસે નુઝૂલે સકીના صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને બા કરીના હૈ : “મેં ને એક શખ્સ કો જન્નત મેં ઘૂમતે હુએ દેખા કે જિધર ચાહતા હૈ નિકલ જાતા હૈ ક્યૂંકે ઉસ ને ઈસ દુન્યા મેં એક ઐસે દરખ્ત કો રાસ્તે સે કાટ દિયા થા જો કે લોગોં કો તકલીફ દેતા થા.”

(સહીહ મુસ્લિમ, સ. 1410, હદીસ : 2617)

આકા صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી બે ઈન્તિહા આજિઝી

હમારે પ્યારે ઔર મીઠે મીઠે આકા صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને અપને ઉસ્વએ હ-સના કે ઝરીએ હમ ગુલામોં કો હુકૂલ ઈબાદ કા ખયાલ રખને કી જિસ હસીન

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْأَهْلُ وَسَلَّمَ जो मुज पर दुइटे पाक पण्डना बूल गया वोह जन्त का रास्ता बूल गया.

अन्दाज में ता'लीम दी है उस की अेक रिक्त अंगेज ललक मुला-लजा इरमाईये. युनान्चे हमारे ज्ञान से भी प्यारे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْأَهْلُ وَسَلَّمَ ने वफ़ाते जाहिरि के वक्त इजतिमाअे आम में अे'लान इरमाया : अगर मेरे जिम्मे किसी का कर्ज आता हो, अगर मैं ने किसी की जान व माल और आबरू को सदमा पड़ोयाया हो तो मेरी जान व माल और आबरू हाजिर है, "इस दुन्या में बढला ले ले." तुम में सो कोई येह अन्देशा न करे के अगर किसी ने मुज से बढला लिया तो मैं नाराज हो जाउंगा येह मेरी शान नही. मुजे येह अम्र बहोत पसन्द है के अगर किसी का हक मेरे जिम्मे है तो वोह मुज से वुसूल कर ले या मुजे मुआइ कर दे. फिर इरमाया : अै लोगो ! जिस शप्स पर कोई हक हो उसे याहिये के वोह अदा करे और जयाल न करे के रुस्वाई होगी इस लिये के दुन्या की रुस्वाई आभिरत की रुस्वाई से बहोत आसान है.

(तारीखे हिमिशक लि इब्ने असाकीर, जि. 48, स. 323 मुलप्पसन)

मैं ने तेरा कान मरोडा था

हजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने

ફરમાને મુસ્તફા: ﷺ: جِسْمِنِے مُؤْجِ پَر اِےك دُرْدِے پاك پھلَا اَللّٰه تَاآلَا اِےس پَر اِےس رِھْمَتِے بَےجَتَا اِے.

અપને એક ગુલામ સે ફરમાયા : મૈં ને એક મર્તબા તેરા કાન મરોડા થા ઈસ લિયે તૂ મુઝ સે ઉસ કા બદલા લે લે.

(અરિયાઝુન્નઝરહ ફી મનાકિબુલ અશરહ, જુઝ : 3, સ. 45, દારુલ કુતુબુલ ઇલ્મિયા બૈરૂત)

મુસલ્માન કી તા'રીફ

અલ્લાહ કે મહબૂબ, દાનાએ ગુયૂબ, મુનઝઝહુન અનિલ ઉયૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને હિદાયત નિશાન હૈ : (કામિલ) મુસલ્માન વોહ હૈ જિસ કી ઝબાન ઔર હાથ સે મુસલ્માન કો તકલીફ ન પહોંચે ઔર (કામિલ) મુહાજિર વોહ હૈ જો ઉસ ચીઝ કો છોડ દે જિસ સે અલ્લાહ તઆલા ને મન્અ ફરમાયા હૈ.

(સહીહુલ બુખારી, જિ. 1, સ. 15, હદીસ : 10)

ઈસ હદીસે પાક કે તહ્ત મુફ્સિસરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફરમાતે હૈં કે “કામિલ મુસલ્માન વોહ હૈ જો લુ-ગતન શરઅન હર તરહ મુસલ્માન હો (ઔર) મોમિન વોહ હૈ જો કિસી મુસલ્માન કી ગીબત ન કરે, ગાલી, તા'ના યુગલી વગૈરા ન કરે, કિસી કો ન મારે પીટે, ન ઉસ કે ખિલાફ કુછ તહરીર કરે.” મઝીદ ફરમાતે

ફરમાને મુસ્તફા: على الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक दुर्रदे पाक पण्डा अल्लाह तआला उस पर दस रहुमते भेजता है.

હું કે “કામિલ મુહાજિર વોહ હૈ જો તર્કે વતન કે સાથ તર્કે ગુનાહ ભી કરે, યા ગુનાહ છોડના ભી લુ-ગતન હિજરત હૈ જો હમેશા જારી રહેગી.”

(મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 1, સ. 29)

મુસલ્માન કો ધૂરના, ડરાના

સરકારે મદીનએ મુનવ્વરહ, સરદારે મક્કએ મુકર્રમા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદિ ફરમાયા : મુસલ્માન કે લિયે જાઈઝ નહીં કે દૂસરે મુસલ્માન કી તરફ આંખ સે ઈસ તરહ ઈશારા કરે જિસ સે તકલીફ પહોંચે. (ઈતિહાફુસ્સાદહ લિઝ્ઝુબૈદી, જિ. 7, સ. 177) એક મકામ પર ઈશાદિ ફરમાયા : કિસી મુસલ્માન કો જાઈઝ નહીં કે વોહ કિસી મુસલ્માન કો ખૌફઝદા કરે. (સુ-નનો અબી દાવૂદ, જિ. 4, સ. 391, હદીસ : 5004, દારો એહયાઈતુરાસિલ અ-રબી બૈરૂત)

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! મા'લૂમ હુવા કે મુસલ્માન દૂસરે મુસલ્માન કા મુહાફિઝ ઔર ગમ ખ્વાર હોતા હૈ, આપસ મેં લડના ઝગડના યેહ મુસલ્માન કા શેવા નહીં બલ્કે ઈસ સે બહોત બડે બડે નુકસાનાત હો જાતે હૈં જૈસા કે હઝરતે સય્યિદુના શૈખ મુહમ્મદ બિન ઈસ્માઈલ

इरमाने मुस्ताफ़ा: صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने मुज पर अक दुर्दे पाक पण्डा अल्लाह तआला उस पर दस रहुमतें भेजता है.

ईस से अन्दाजा कीजिये के आपस का जगडा किस कदर नुकसान देह है. मगर आह ! जगडालू मिजाज के लोगों को कौन समजाये ? आज कल तो बा'ज मुसल्मान बडे इफ्र से येह कहते हुअे सुनाई दे रहे हैं के “मियां ईस दुन्या में शरीफ़ रह कर गुजारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बढ मआशों के साथ बढ मआश हैं !” और सिर्फ़ कहने पर भी ईकतिफ़ा थोडे ही है ! जसा अवकात तो मा'मूली सी बात पर पहले जमान दराजी, फिर दस्त अन्दाजी, फ़ीर याकू बाजी बढके गोवियां तक चल जाती हैं. सद करोड अइसोस ! आज के बा'ज मुसल्मान बा वुजूद मुसल्मान होने के कत्मी पठान बन कर, कत्मी पंजाबी कहला कर, कत्मी सराईकी बन कर, कत्मी मुहाजिर हो कर, कत्मी सिन्धी और बलूच कौमियत का ना'रा लगा कर अक दूसरे का गला काट रहे हैं, दुकानों और गाडियों को आग लगा रहे हैं, मुसल्मानो ! आप तो अक दूसरे के मुहाजिज थे, आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आका, रहमतों वाले मुस्ताफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इरमाने आलीशान तो येह है के “बाहम महब्बत व रहम व नरमी में मोमिनों की मिसाल अक जिस्म की तरह है के अगर अक उजूव को तकलीफ़

ફરમાને મુસ્તફા: ﷺ جيسने मुझ पर इस मर्तबा दुःखे पाक पण्डा अल्लाह तआला (उस पर सौ रहमतें नाज़िल फरमाता है.

પહોંચે તો સારા જિસ્મ ઉસ તકલીફ કો મહસૂસ કરતા હૈ.”

(સહીહ મુસ્લિમ, સ. 1396, હદીસ : 2586)

એક શાઈર ને કિતને પ્યારે અન્દાઝ મેં સમજાયા હૈ :

મુખ્તલાએ દર્દ કોઈ ઉઝવ હો રોતી હૈ આંખ

કિસ કદર હમદર્દ સારે જિસ્મ કી હોતી હૈ આંખ

જો બુરાઈ કરે ઉસ પર ભી ઝુલ્મ ન કરો

“તિરમિઝી શરીફ” કી રિવાયત મેં હૈ કે સરકારે

મદીના, કરારે કલ્બો સીના ﷺ کا ફરમાને

બા કરીના હૈ : “તુમ લોગ નક્કાલ ન બનો કે કહો અગર

લોગ ભલાઈ કરેંગે તો હમ ભલાઈ કરેંગે ઓર અગર લોગ

ઝુલ્મ કરેંગે તો હમ ભી ઝુલ્મ કરેંગે, લેકિન અપને નફસ કો

કરાર દો કે લોગ ભલાઈ કરે તો તુમ ભી ભલાઈ કરો ઓર

લોગ બુરાઈ કરે તો તુમ ઝુલ્મ ન કરો.”

(સુ-નનુતિરમિઝી, જિ. 3, સ. 405, હદીસ : 2014)

પરાઈ કલમ લોટાને કે લિયે સફર

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! દેખા આપ ને ! હમારે

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى وَالْوَالِدِينَ: तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पण्डो तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है.

प्यारे आका وَسَلِّمْ ने हमें मुसल्मानों की हमददी करने के तअल्लुक से कितने प्यारे म-दनी झूल धनायत इरमाअे हैं. हमारे जुजुगानि दीन رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرَةِ दूसरों के हुकूक के मुआ-मले में धन्तिछाई द-रजे हुस्सास छोते थे और अछाईगिये छक के मुआ-मले में छैरत अंगेज छद तक मोछतात भी. युनान्थे छजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ मुल्ले शाम में यन्द रोज के लिये मुकीम हुअे, वछां अछादीसे मुआ-रका लिखते रहे. अेक बार उन का कलम टूट गया लिछाज्ज आरिथ्यतन (या'न वक्ती तौर पर) किसी और से कलम छसिल किया, वापसी पर लूले से वोछ कलम वतन साथ लेते आअे. जब याद आया तो सिई कलम वापस देने के लिये आप عَلَيْهِ ने अपने वतन से मुल्ले शाम का सइर किया.

(तजकि-स्तुल वाईजीन, स. 243 कोअेटा)

बिगैर धज्जत किसी की यप्पल पछनना कैसा ?

भीठे भीठे धस्लामी भाईयो! देया आप ने! سُبْحَانَ اللَّهِ!

हमारे अस्लाइ عَلَيْهِ पराई यीज के मुआ-मले में अल्लाह तआला से किस कदर उरते थे ! मगर अइसोस !

करमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى غلوا والويلم जिस्ने मुज पर दस मर्तबा सुब्द औस दस मर्तबा शाम दुरदे पाक पण्डा उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी.

अब हम इस सिद्धिसिले में बिल्कुल बे पौड़ छोते जा रहे हैं ! याद रखिये ! अभी तो दूसरों की चीजें जान बूझ कर रख लेना बड़ोत आसान मा'लूम होता है मगर कियामत में साहिबे हक को इस का बदला युकाना और उस को राजी करना बड़ोत ही मुश्किल हो जायेगा लिहाजा दूसरों के अेक अेक दाने और अेक अेक तिन्के के बारे में अेहतियात करनी याहिये, बिगैर एंजाजत किसी की कोई चीज म-सलन यादर, तोलिया, भरतन, यारपाई, कुरसी वगैरा वगैरा हरगिज एंस्ति'माल नहीं करनी याहिये हां अगर एंन चीजों के मालिक की तरफ़ से एंजने आम हो तो एंस्ति'माल करने में हरज नहीं. म-सलन किसी के घर मेहमान बन कर गये तो उमूमन इस तरह की चीजों के एंस्ति'माल की साहिबे पाना की तरफ़ से छूट होती है. अकसर देखा जाता है के मस्जिद में बा'ज लोग बिगैर एंजाजते मालिक उस की यप्पल पहन कर एंस्तिन्जापाने यले जाते हैं. ब जाहिर येह अमल बड़ोत ही मा'मूली लग रहा है मगर जरा सोचिये तो सही ! आप किसी की यप्पल पहन कर एंस्तिन्जापाने तशरीफ़ ले गये और उस का मालिक बाहर जाने के लिये अपनी यप्पलों

ફરમાને મુસ્તફા: مُؤْتَى عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَالْوَيْلُ મુઝ પર દુરદે પાક કી કસરત કરો બે શક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ.

કી તરફ આયા, ગાઈબ પા કર યેહ સમઝ કર કે ચોરી હો ગઈ બેચારા દિલ મસૂસ કર રહ ગયા ઓર નંગે પાઉં હી ચલા ગયા. આપ ને અગર્યે વાપસ આ કર ચપ્પલેં જહાં સે લી થીં વહીં રખ દીં મગર ઉસ કા માલિક તો ઉન્હેં ઝાએઅ કર ચુકા. ઈસ કા વબાલ કિસ પર ? યકીનન આપ પર ઓર આપ હી ઝાલિમ ઠહરે. આહ ! બરોઝે કિયામત ઝાલિમ કી હસરત ! હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ અબ્દુલ વહ્હાબ શા'રાની قُدَس سِرَّةُ النَّوَرَانِي ફરમાતે હેં : “બસા અવકાત એક હી ઝુલ્મ કે બદલે ઝાલિમ કી તમામ નેકિયાં લે કર ભી મઝલૂમ ખુશ ન હોગા.” (તમ્બીહુલ મુગ્તરીન, સ. 50) જભી તો હમારે ખુઝુગાને દીન رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْبَرِيَّانِينَ બ ઝાહિર મા'મૂલી નઝર આને વાલી બાતોં મેં ભી એહતિયાત ફરમાતે થે. હુજજતુલ ઈસ્લામ હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ ગઝાલી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ફરમાતે હેં :

ખુશબૂ સૂંઘને મેં એહતિયાત

હઝરતે અમીરુલ મુઅમિનીન સચ્ચિદુના ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કે સામને મુસલ્માનોં કે લિયે મુશક કા વઝ્ન કિયા જા રહા થા, તો ઉન્હોં ને ફૌરન અપની

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى وَالْوَيْلُ لِمَنْ كَفَرَ بِهِ ج़िसने किताब में मुज़ पर दुरदे पाक लिभा तो ज़ब तक मेरा नाम उस किताब में लिभा रहेगा फिरिश्ते उसके लिखे इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे.

नाक बन्द कर ली ताके उन्हें पुरशू न पड़ोये ज़ब लोगों ने येह बात महसूस की तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : पुरशू सूँघना ही तो इस का नज़्अ है. (यूके मेरे सामने इस वक्त वाफ़िर भिकदार में मुश्क मौजूद है लिहाजा इस की पुरशू भी ज़ियादा आ रही है और मैं इतनी ज़ियादा पुरशू सूँघ कर दीगर मुसल्मानों के मुकाबले में जाईद नज़्अ हासिल करना नहीं याहता.) (अहयाउल उलूम, ज़ि. 2, स. 121, क़ुल कुलूब, ज़ि. 2, स. 533) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी भग़िरत हो.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

यराग बुजा दिया !

“कीमियाअे सआदत” में है : अक बुजुर्ग रात के वक्त किसी मरीज़ के सिरहाने तशरीफ़ इरमा थे, कज़ाअे ईलाही عَزَّ وَجَلَّ से वोह भीमार झूँत हो गया, कुरबान ज़ईये उन बुजुर्ग की म-दनी सोय पर के उन्हीं ने झौरन यराग गुल कर दिया और इरमाया : “अब इस यराग के तेल में वारिसों का हक भी शामिल हो गया है.” (कीमियाअे सआदत, ज़ि. 1, स. 347) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी भग़िरत हो.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा: **رَحِمَهُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** मुज पर कसरत से दुर्रदे पाक पण्डो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रदे पाक पण्डना तुम्हारे गुनाहों के लिये मञ्जिरत है.

भाग या जहन्नम का गढा

अल्लाह ! अल्लाह ! हमारे जुजुगाने दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** कितनी अजीम म-दनी सोय के मालिक होते थे ! हम तो ऐसा सोय भी नहीं सकते औलियाअे किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हर वक्त पौड़े खुदा **عَزَّ وَجَلَّ** से लरजां व तरसां रडा करते हैं, हर दम मौत उन के पेशे नजर रहती, कध्रो हरर के मुआ-मलात से कभी गाइल नहीं होते. आह ! कध्र का मुआ-मला बे छन्तिहा तशवीश नाक है ! हाअे हमारा क्या बनेगा ! हम तो अपनी कध्र को यकसर भूले हुअे हैं “अेहयाउल उलूम” में है : हजरते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी **رَحِمَهُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** फ़रमाते हैं “जो शप्स कध्र को अकसर याद करता है वोह मरने के बा’द अपनी कध्र को जन्नत के भागों में से अेक भाग पाअेगा और जो कध्र को भुला देगा वोह अपनी कध्र को जहन्नम के गढों में से अेक गढा पाअेगा.”

(अेहयाउल उलूम, जि. 4, स. 238)

गोरे नेकां भाग होगी फुल्ल का

मुजरिमों की कध्र होअप का गढा

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه واله وسلم जो मुज़ पर अेक मर्तबा दुवूद शरीफ़ पण्डता है अदल्लाह तआला (उसके लिये) अेक कीरात अज्र लिपता है और अेक कीरात हुद पडाण जितना है.

आधी ढजूर

याद रभिये ! अपने छोटे छोटे म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के ली हुकूक का ढयाल रभना होता है. ँस मुआ-मले में बे अेडतियाती बाँधसे हलाकत और अेडतियात सभबे दुषूले जन्त है. युनान्थे हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ँस्माँल ढुभारी عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي अपने मजमूअे अडादीस, अल मौसूम, “सडीह ढुभारी” में नकल करते हैं : उम्मुल मुअभिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आँशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने इरमाया : अेक औरत जिस के साथ दो² बय्यियां थीं, उस ने आ कर मुज़ से सुवाल किया (या'नी मुज़ से कुँघ मांगा), मेरे पास उस वक्त सिर्फ़ अेक ढजूर थी वोह मैं ने उस को दे दी उस ने ढजूर के दो² टुकडे कर के दोनों² को अेक अेक टुकडा दे दिया. जब सय्यि-दतुना आँशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अदल्लाह के मडढूढ, दानाअे गुयूढ, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूढ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ढिदमत में येह वाकिआ अर्ज़ किया तो इरमाया : “जिस को लडकियां अता हुँँ और उस ने उन के साथ अख़ा सुलूक किया तो येह उस के लिये जहन्नम से आड बन जाँगी.”

(सडीहल ढुभारी, जि. 4, स. 99, हदीस : 5995)

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه وسلم: मुज पर दुइदे शरीफ़ पण्डो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा.

शाही थप्पड़ का अन्जाम

अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ लुकूकुल एबाद के मुआ-मले में किसी की रिआयत न इरमाते थे. युनान्ये शाहे गस्सान नया नया मुसल्मान हुवा था और उस से हजरते सय्यिदुना फ़ाड़के आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बहोत जियादा पुरी हुई थी क्यूं के उस के सबब अब उस की रिआया के इमान लाने की उम्मीद पैदा हो गई थी. दौराने तवाइ शाहे गस्सान के कपडे पर किसी गरीब आ'राबी का पाउं आ गया, गुस्से में आ कर उस ने अैसा जोरदार तमांया मारा के आ'राबी का दांत शहीद हो गया. उस ने सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बारगाह में इरियाद की. शाहे गस्सान ने तमांया मारने का अे'तिराइ किया तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुदई या'नी उस मजलूम आ'राबी से इरमाया के आप शाहे गस्सान से किसास या'नी बदला ले सकते हैं. येह सुन कर शाहे गस्सान ने बुरा मानते हुअे कहा के अेक मा'भूली शप्स मुज जैसे बादशाह के बराबर कैसे हो गया जो ईस को मुज से बदला लेने का हक हासिल हो गया ! आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

इरमाने मुस्तफ़ा: **إِنَّهُ عَلَى اللَّهِ قَدِيرٌ وَالْوَيْلُ لِمَنْ كَفَرَ**।
 बेशक मैं तमाम जलानों के रज का रसूल हूँ।

ने इरमाया : ईस्लाम ने तुम दोनों² को बराबर कर दिया है. शाहे गस्सान ने किसास के लिये अेक दिन की मोडलत ली और रात के वक्त निकल भागा और मुरतद हो गया.

(भुत्भाते मुडर्रम, स. 138, शब्बीर बिरादर्र मर्कजुल औलिया लाहोर)

झरुके आ'जम की सादगी

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! डरते सय्यिदुना झरुके आ'जम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने शाहे गस्सान जैसे बादशाह की उर्रा बराबर ली रिआयत न इरमाई और उस बढ नसीब के ईस्लाम से झिर कर दोबारा कुर्र के गढे में कूद जाने से ईस्लाम को ली कोई नुकसान न पछोंया. बढके अगर डरते सय्यिदुना झरुके आ'जम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** रिआयत इरमा देते तो शायद ईस्लाम को उरर (या'नी नुकसान) पछोंयता और लोगों का ईस तरड जेहन बनता के ईस्लाम कमजोर को ताकतवर से **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** डक नहीँ दलवा सकता. येड आदिलाना निजाम ही की ब-र-कत थी के अेक रोज डरते सय्यिदुना झरुके आ'जम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बिगैर किसी मुडाझिज के बे भौड़ व पतर गरमी के भौसिम में अेक दरपत के नीये पथर पर अपना मुबारक सर रज कर सो रहे थे के इम का

इरमाने मुस्तफा: على الله فاني ظلم والله وعلم: जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सौ बार दुरदे पाक पण्डा उसके दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे.

कासिद उन की तलाश में धंधर आ निकला और उन्हें धस तरह सोता देष कर हैरान रह गया के क्या येही वोह शप्स है जिस से सारी दुन्या लरजा भर अन्धाम है ! फिर वोह बोल उठा : औ उमर ! आप अद्दल करते हैं, हुकूकुल एबाद का जयाल रभते हैं तो आप को पत्थरों पर भी नींद आ जाती है और हमारे बादशाह जुल्म करते हैं बन्दों के हुकूक पामाल करते हैं लिहाजा उन्हें मज्मलीं बिस्तरों पर भी नींद नहीं आती. अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बुरे खातिमे के अस्बाब

जुल्म की नुहूसत भी तो देषिये “शाहे गस्सान” का धिमान ही बरबाद हो गया ! हज़रते सय्यिदुना अबूबक़ वर्राक़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : “बन्दों पर जुल्म करना अकसर सल्बे धिमान का सबाब बन जाता है.” हज़रते सय्यिदुना अबुल कासिम हकीम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से किसी ने पूछा : कोई औसा गुनाह भी है जो बन्दे को धिमान से

ફરમાને મુસ્તફા: عليه السلام જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસકી શફાઅત કરુંગા.

મહરૂમ કર દેતા હૈ ? ફરમાયા : બરબાદિયે ઈમાન કે તીન અસ્બાબ હેં : (1) ઈમાન કી ને'મત પર શુક ન કરના (2) ઈમાન ઝાએઅ હોને કા ખૌફ ન રખના (3) મુસલમાન પર ગુલમ કરના. (તમ્બીહુલ ગાફિલીન, સ. 204)

ખુદ કો કિસી કા “ગુલામ” કહના કેસા ?

હમારે બુઝુર્ગાને દીન رَحْمَهُمُ اللَّهُ السُّبِين ને હુકૂકુલ ઈબાદ કે મુઆ-મલે મેં એહતિયાત કી એસી મિસાલેં કાઈમ કી હેં કે અક્લ હૈરાન રહ જાતી હૈ. યુનાન્યે ઈમામે આ'ઝમ, ફકીહે અફખમ હઝરતે સય્યિદુના ઈમામે અબૂ હનીફા رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કે મશહૂર શાગિર્દ કાઝિયુલ કુઝાહ યા'ની (CHIEF JUSTICE) હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ અબૂ યૂસુફ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ખલીફા હાઝનુર્શીદ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد કે મો'તમદ (યા'ની કાબિલે એ'તિમાદ) વઝીર ફઝ્લ બિન રબીઅ કી ગવાહી કબૂલ કરને સે ઈન્કાર કર દિયા. ખલીફા હાઝનુર્શીદ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد ને જબ ગવાહી કબૂલ ન કરને કા સબબ દરયાફત કિયા તો ફરમાયા : એક બાર મેં ને ખુદ અપને કાનોં સે સુના કે વોહ આપ સે કહ રહા થા : “મેં આપ કા ગુલામ હૂં” અગર વોહ ઈસ

फ़रमाने मुस्तफ़ा: على الله فاعلموا بالله उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज परदुदुदे पाक न पण्डे.

कौल में सय्या था तो वोह आप के हक में गवाही देने के लिये ना अहल हुवा क्यूं के आका के हक में गुलाम की गवाही ना मकबूल है और अगर बतौरे भुशामद इस ने जूट बोला था तब भी इस की गवाही कबूल नहीं की जा सकती के जो शप्स आप के दरबार में बेबाकी के साथ जूट बोल सकता है वोह मेरी अदालत में जूट से कब बाज रहेगा !

क्या डाल है ?

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ? हजरते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رضي الله تعالى عنه किस कदर जहीन थे और अह्ल हो तो औसा के किसी बन्दे के हक के मुआ-मले में निहायत ही बेबाकी के साथ जलीफ़े वक्त के हक में उस के पास वजीर की गवाही भी मुस्तरद कर दी. यहां वाकेई अेक नुक्ता काबिले गौर है के बसा अवकात भुशा-मदाना तौर पर या यूं ही बे सोये समजे अपने आप को अेक दूसरे का पादिम या गुलाम या सग वगैरा बोल दिया जाता है मगर हिल इस के बिल्कुल उलट होता है, काश ! हिल व जभान यकसां हो जायें.

इरमाने मुस्तफ़ा: طی اللہ فاضل علیہ والہ وسلم जिसके पास मेरा ठिक छो और वोड मुज पर दुइद शरीक न पण्डे तो लोगो में वोड कन्जूस तरीन शप्स है.

हमारे अस्लाफ़ हिल और ज़बान की यकसानियत का बहोत ज़ियादा जयाल रजते थे युनान्थे **ईमामुल मुअब्बिरीन** हजरते सय्यिदुना **ईमाम मुहम्मद ईब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِينِ ने अक शप्स से पूछा : क्या डाल है ? वोड बोला : “उस का क्या डाल डोगा जिस पर पांय सो द्दिरहम कर्ज डो, डाल बय्येदार डो मगर पल्ले कुछ न डो.” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ येड सुन कर घर तशरीफ़ लाअे और अक डजार द्दिरहम ला कर उस को पेश करते डुअे इरमाया : “पांयसो द्दिरहम से अपना कर्ज अदा कर दीजिये और मज़ीद पांयसो अपने घर जर्य के लिये कबूल इरमाईये. ईस के बा’द आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने हिल में अडद क़िया के आईन्दा किसी का डाल दरयाइत नहीं करुंगा. डुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना **ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली** إِلَى رَحْمَةِ اللَّهِ الْوَالِي इरमाते डैं : **ईमाम ईब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِينِ ने येड अडद ईस लिये क़िया के अगर मैं ने किसी का डाल पूछा और उस ने अपनी परेशानी बताई इर अगर मैं ने उस की मदद नहीं की तो मैं पूछने के मुआ-मले में “मुनाफ़िक” ठडरुंगा.” (कीभियाअे सआदत, जि. 1, स. 408, ईन्तिशारते गन्जना तहरान)

करमाने मुस्तफ़ा: طى الله فنى لله وطمه जिस के पास मेरा जिक्र हो और उसने दुर्इद शरीफ़ न पण्डा उसने जफ़ा की.

मुनाफ़िक ठहड़ंगा की वजाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो! देखा आप ने! हमारे अस्लाफ़ِ رَحْمَهُمُ اللهُ تَعَالَى कितने भरे और सच्ये हुवा करते थे, उन का जेहून येह था के जब तक सामने वाले से हकीकी मा'नों में हमददी का जजबा न हो उस का हल न पूछा जाये और हल पूछने की सूरत में अगर वोह परेशानी बताये तो हतल मकदूर उस की इमदाद की जाये. याद रहे! इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَسِين ने मदद न करने की सूरत में अपने लिये येह जो इरमाया के “मुनाफ़िक ठहड़ंगा” इस से यहां मुनाफ़िके अ-मली मुराद है और निफ़ाके अ-मली कुफ़ नही.

मजलूम की इमदाद करना जरूरी है

जहां जुल्म करना बन्दों की हक त-वही है वहां भा वुजूदे कुदरत मजलूम की मदद न करना भी जुर्म है. युनान्ये हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : رَسُوْلُ اللهِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى كَذَبْتُمْ هَؤُلَاءِ : अल्लाह एज़्रुजल इरमाता है :

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى و سلم उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह दुइदे पाक न पण्डे.

“मुझे मेरी ईज़्ज़त व जलाल की कसम में जल्दी या देर में आलिम से बढला ज़रूर लूंगा. और उस से भी बढला लूंगा जो बा वुजूदे कुदरत मजलूम की ईमदाद नहीं करता.”
(अत्तरगीब वत्तरहीब, जि. 3, स. 145, हदीस : 3421) मा'लूम हुवा जो मजलूम की मदद करने की कुदरत रખता है फिर भी नहीं करता वोह गुनहगार है. अलबत्ता जो मदद पर कादिर न हो उस पर गुनाह नहीं जैसा के हज़रते शारेहे बुभारी मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِي इरमाते हैं : “याद रहे ! मुसल्मान की मदद, मदद करने वाले के हाल के अतिबार से कभी इर्ज़ होती है कभी वाज़िब कभी मुस्तहब.”

(नुज़हतुल कारी, जि. 3, स. 665, इरीद बुक स्टोल)

क़भ्र से शो'ले उठ रहे थे !

जलीफ़अे आ'ला हज़रत इकीहे आ'ज़म हज़रते अल्लामा अबू यूसुफ़ मुहम्मद शरीफ़ कोटलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِي अपनी किताब “अप्लाकुस्सालिहीन” में नक़ल करते हैं : अबू मैसरह عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِي इरमाते हैं : अक़ क़भ्र से शो'ले उठ रहे थे और मय्यित को अज़ाब हो रहा था, मुर्दे ने पूछा : मुझे क्यूं मारते हो ? इरिशतों ने क़हा के अक़ मजलूम ने तुज़ से

इरमाने मुस्तफ़ी: *علي الله فاني عليه وهو علم* जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद न पण्डे तो लोगो में वोह कजूस तरीन शप्स है.

इरियाद की मगर तूने उस की इरियाद रसी नहीं की और अेक दिन तूने बे वुजू नमाज पढी.

(अप्लाकुस्सालिहीन, स. 57, तम्बीहुल मुगतर्रीन, स. 51)

मुसल्मानों का गम

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! येह तो उस शप्स का डाल है जो मजलूम की मदद पर कुदरत होने के बा वुजूद उस की मदद नहीं करता तो खुद जालिम का क्या डाल होगा ! मा'लूम हुवा के मजलूम की उत्तल वरख मदद करनी याहिये और मजलूम की मदद करने में बहोत अजूरो सवाब है. हमारे बुरुगानि दीन *رَحْمَةُ اللَّهِ الْبُيِّنَاتِ* को मुसल्मानों की तकालीफ़ का किस कदर अेहसास था ईस का अन्दाजा "कीमियाअे सआदत" में बयान कर्दा ईस हिकायत से कीजिये युनान्ये अेक मर्तबा लोगो ने देखा के हजरते सय्यिदुना हुजैल बिन ईयाज *رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ* रो रहे हैं, जब रोने की वजह दरयाफ़्त की गई तो इरमाया : में उन बेयारे मुसल्मानों के गम में रो रहा हूं जिन्हों ने मुज पर मजालिम किये हैं के कल बरोजे कियामत जब उन से सुवाल होगे के तुम ने अैसा क्यूं किया ? उन का कोई उजूर न सुना जाअेगा और

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله فضلنا والى وسلم जिस के पास मेरा जिक्र हो और उसने दुइद शरीफ़ न पण्डा उसने जइा की.

वोह जलील व रुस्वा होंगे.

(कीमियाअे सआदत, जि. 1, स. 393)

योर का गम

अेक बुजुर्ग का वाकिआ है के उन की रकम किसी ने निकाल ली थी और वोह रो रहे थे लोगों ने हमदर्दी का ँजहार किया तो इरमाने लगे : मैं अपनी रकम के गम में नहीं बल्के योर के गम में रो रहा हूं के कल कियामत में बेयारा बतौरे मुजरिम पेश किया जाअेगा उस वक्त उस के पास कोर्ण उजूर नहीं होंगा. आह ! उस वक्त उस की कितनी रुस्वाई होगी.

योरी का अजाब

योर की बात निकली तो योरी का अजाब ली अर्ज करता यलूं इकीह अबुल्लैस समर कन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي "कुर्तुल उयून" में नकल करते हैं : जिस ने किसी का थोडा सा माल ली युराया वोह कियामत के रोज उस माल को अपनी गरदन में आग के तौक (हार) की शकल में लटका कर आअेगा. और जिस ने थोडा सा ली माले हराम षाया उस के पेट में आग सुलगाई जाअेगी और वोह ँस कदर षौइनाक यीषें मारेगा के जितने लोग अपनी कब्रों से उठेंगे

ફરમાને મુસ્તફા: ﷺ علی اللہ فانی علیہ والہ وسلم جس کے پاس میرا ٹિક ڈوا اور उसने मुज पर दुरदे पाक न पण्डा।
તહકીક વોહ બદ બખત હો ગયા.

કાંપ જાએંગે યહાં તક કે ખુદાએ અહ્કમુલ હાકિમીન **كَلِّ لَوِغُو** કે સામને જો ભી ફૈસલા ફરમાએ.

(કુર્તુલ ઉચૂન, સ. 392)

ગુનાહોં કે મરીજોં કા ઈલાજ કરને વાલોં કે લિયે મ-દની ફૂલ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બાત ચલી થી

મુસલ્માનોં કા ગમ ખાને કી ઓર હમારે બુઝુગાને દીન

رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى મુસલ્માનોં કે ગુનાહોં કે સબબ હોને વાલે

હોલનાક અઝાબ કે મુ-તઅલ્લિક ગૌર કર કે ઉન પર રહ્મ

કરતે, ઉન કે લિયે ગમગીન હોતે ઓર ઉન કી ઈસ્લાહ કે

લિયે કુઢતે થે. હમેં ભી મુસલ્માનોં કી હમદદી ઓર ગમ

ગુસારી કરની યાહિયે, ઈન કી ઈસ્લાહ કે લિયે હર દમ

કોશાં રહના યાહિયે ઓર ઈસ મેં હૌસલા બડા રખના

ઓર હિકમતે અ-મલી સે કામ લેના યાહિયે. ઈસ ઝિમ્ન

મેં હમે ડોક્ટર કે તરીકે કાર કો સમઝને કી કોશિશ કરની

યાહિયે જૈસા કે કડવી દવા ઓર ઈન્જેક્શન વગૌરા કે સબબ

મરીઝ અગર ડોક્ટર સે કતરાતા ભી હૈ તબ ભી ડોક્ટર

ઉસ સે નફરત નહીં બલકે પ્યાર હી સે પેશ આતા હૈ ઈસી

તરહ ગુનાહોં કા મરીઝ યાહે હમારા મઝાક ઉડાએ, ખ્વાહ

इरमाने मुस्तफ़ा: عليه السلام जिसने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पण्डा अल्लाह तआला उस पर दस रहुमते भेजता है.

हुम पर इन्तियां कसे हुमें भी हिम्मत नही हारनी याहिये, अगर हुम सअ्ये पैहुम करते रहेंगे और मैदाने अमल से भागने वालो को दा'वते ईस्लामी के म-दनी काङ्किलों में सफ़र के आदी बनाने में काम्याब हो जाअेंगे तो إِنَّ اللَّهَ عَزُورٌ गुनाहों के मरीज जरूर शिफ़ायाब होते यले जाअेंगे.

मुप्तलिङ् हुकूक सीपने का तरीका

याह रभिये! बन्दों के हुकूक के मुआ-मले में वालिदैन का मुआ-माल सरे इेहरिस्त है इस की तइसीली मा'लूमात मक-त-बतुल मदीना का जारी कर्दा बयान का ओडियो केसेट "मां बाप को सताना हराम है" और निगराने शूरा की VCD "मां बाप के हुकूक" समाअत इरमाईये. इसी तरह औलाह के हुकूक, मियां बीवी के हुकूक, कराबत दारों के हुकूक, पडोसियों के हुकूक वगैरा जो हैं वोह आम बन्दों के हुकूक से जियादा अहम्मियत रभते हैं. येह सारे हुकूक इस मुप्तसर से बयान में नहीं सीपे जा सकते इस के लिये मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ इन तीन³ रसाईल (1) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के हुकूक (2) हुकूकुल ईबाह कैसे मुआइ हों और (3) औलाह के हुकूक का मुता-लआ

इरमाने मुस्ताफा: صلى الله عليه وآله وسلم जो मुज पर दुरदे पाक पण्डना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया.

इरमाँये नीज म-दनी काङ्किलों में सुन्नतों भरा सङ्कर करते रहिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हुकूकुल एबाद के बारे में मा'लूमात के साथ साथ अहतियात का जजबा भी पैदा होगा और जब अहतियात करेंगे तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जन्त का रास्ता आसान हो जायेगा.

अलिम के मुफ्तलिङ् अन्दाज की निशान देही

मुसल्मानों को सताने वालों, लोगों के दिल दुषाने वालों, लोगों के बुरे नाम रखने वालों, लोगों पर इब्तियां कसने वालों, लोगों की नकलें उतारने वालों, और लोगों का मजाक उडाने वालों के लिये लम्हअे झिङ्किया है, सुनो ! सुनो ! रब्बे काअेनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 11 में एर्शाह इरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرَكُم مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءً مِّن نِّسَاءِ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْبِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِاللِّقَابِ ۗ بَدِئَ الْإِسْمِ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ ۗ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

ફરમાને મુસ્તફા: على الله تعالى عليه وهو سلم: જિસને મુઝ પર એક દુરુદે પાક પળહા અલ્લાહ તઆલા ઉસ પર દસ રહમતે બેજતા હે.

મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, વલિયે ને'મત, અઝીમુલ બ-ર-કત, અઝીમુલ મર્તબત, પરવાનએ શમ્એ રિસાલત, ઈમામે ઈશકો મહબ્બત, મુજદિદે દીનો મિલ્લત, હામિયે સુન્નત, માહિયે બિદઅત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, આફતાબે વિલાયત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن અને શોહરએ આફાક તર-જ-મએ કુરઆન, કન્ઝુલ ઈમાન મેં ઈસ કા તરજમા યૂં કરતે હૈં : ઐ ઈમાન વાલો ! ન મર્દ મર્દોં સે હંસેં અજબ નહીં કે વોહ ઈન હંસી હંસને વાલોં સે બેહતર હોં ઔર ન ઔરતેં ઔરતોં સે, દૂર નહીં કે વોહ ઈન હંસને વાલિયોં સે બેહતર હોં ઔર આપસ મેં તા'ના ન કરો ઔર એક દૂસરે કે બુરે નામ ન રખો. ક્યા હી બુરા નામ મુસલ્માન હો કર ફાસિક કહલાના ઔર જો તૌબા ન કરેં વોહી ઝાલિમ હૈં.

કિસી કી હંસી ઉડાના ગુનાહ હૈ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! કિસી કી ગુરબત યા હસબ નસબ યા જિસ્માની ઐબ પર હંસના ગુનાહ હૈ ઈસી

इरमाने मुस्तफी: على الله تعالى غلبه واله وطم जिसने मुज पर ओक दुइटे पाक पण्डा अल्लाह तआला उस पर दस रहुमतें भेजता है.

तरह किसी मुसल्मान को भुरे अल्काब से पुकारना भी गुनाह है, किसी को कुत्ता, गधा, सुवर वगैरा नहीं कह सकते, ईसी तरह किसी में औब भौजूद हो तब भी उसे उस औब के साथ नहीं पुकार सकते म-सलन औ अन्ये ! अबे काने ! ओ लम्बे ! अरे ठिंगने ! वगैरा, हां ज़रतन पहयान करवाने के लिये नाबीना वगैरा कह सकते हैं. लोगों पर हंसने, भुरे अल्काब से पुकारने और मज़ाक उड़ाने वालों को कुरआने पाक ने “इसिक” का इतवा ईशाद इरमाया है और जो तौबा न करे उसे जालिम करार दिया है. लोगों का मज़ाक उड़ाने वालो ! कान भोल कर सुन लो !

मज़ाक उड़ाने का अज़ाब

जब किसी मुसल्मान का मज़ाक उड़ाने को जो याहे तो भुदारा ईस रिवायत पर गौर इरमा लिया कीजिये जिस में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, शह-शाहे अजरार, सरकारे वाला तबार, हम गरीबों के गम गुसार, हम बे कसों के मददगार, साहिबे पसीनअे भुशबूदार, शईअे रोजे शुमार, जनाबे अहमदए मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईब्रत

ફરમાને મુસ્તફા: ﷺ على الله تعالى عليه واله وسلم जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उसने मुझ पर दुश्मि पाक न पण्डा तलकिक वोल बढ भक्त हो गया.

निशान है : कियामत के रोज लोगों का मजाक उड़ाने वाले के सामने जन्नत का एक दरवाजा ખोला जायेगा और कहा जायेगा के आओ ! आओ ! तो वोह बहोत ही बेयैनी और गम में डूबा हुआ उस दरवाजे के सामने आयेगा मगर जैसे ही दरवाजे के पास पहुँचेगा वोह दरवाजा बन्द हो जायेगा. फिर जन्नत का एक दूसरा दरवाजा खुलेगा और उस को पुकारा जायेगा के आओ ! युनान्चे येह बेयैनी और रन्जो गम में डूबा हुआ उस दरवाजे के पास जायेगा तो वोह दरवाजा भी बन्द हो जायेगा. इसी तरह उस के साथ मुआ-मला होता रहेगा यहां तक के जब दरवाजा खुलेगा और पुकार पडेगी तो वोह नहीं जायेगा.

(किताबुस्समत मअ मौसूअल इमाम इब्ने अबिदुन्या, जि. 7, स. 183,184, रकम : 287)

मुआझी मांग लीजिये

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! सभ घबरा कर अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ कर लीजिये, सख्खी तौबा कर लीजिये और ठहरिये ! बन्दों की लक त-लझी

ફરમાને મુસ્તફા: على الله تعالى عليه والويلم जिसने मुझ पर एक दुर्रदे पाक पण्डा अब्दुल्लाह तआला उस पर दस रहुमते भेजता है.

કે મુઆ-મલે મેં બારગાહે ઈલાહી عَزَّوَجَلَّ મેં સિર્ફ તૌબા કરના કાફી નહીં, બન્દોં કે જો જો હુકૂક પામાલ કિયે હોં વોહ ભી અદા કરને હોંગે, મ-સલન માલી હક હૈ તો ઉસ કા માલ લૌટાના હોગા, દિલ દુખાયા હૈ તો મુઆફ કરવાના હોગા. આજ તક જિસ જિસ કા મઝાક ઉડાયા, બુરે અલકાબ સે પુકારા, તા'ના ઝની ઔર તન્ઝ બાઝી કી, દિલ આઝાર નક્લેં ઉતારીં, દિલ દુખાને વાલે અન્દાઝ મેં આંખેં દિખાઈં, ઘૂરા, ડરાયા, ગાલી દી, ગીબત કી ઔર ઉસ કો પતા ચલ ગયા. ઝાડા, મારા, ઝલીલ કિયા, અલ ગરઝ કિસી તરહ ભી બે ઈજાઝતે શર-ઈ ઈઝા કા બાઈસ બને ઉન સબ સે ફરદન ફરદન મુઆફ કરવા લીજિયે, અગર કિસી ફર્દ કે બારે મેં યેહ સોચ કર બાઝ રહે કે મુઆફી માંગને સે ઉસ કે સામને મેરી “પોઝીશન ડાઉન” હો જાએગી તો ખુદારા ગૌર ફરમા લીજિયે ! કિયામત કે રોઝ અગર યેહી ફર્દ આપ કી નેકિયાં હાસિલ કર કે અપને ગુનાહ આપ કે સર ડાલ દેગા ઉસ વક્ત ક્યા હોગા ! ખુદા કી કસમ ! સહીહ મા'નોં મેં આપ કી “પોઝીશન” કી ધજિજયાં તો ઉસ વક્ત ઉડેંગી ઔર આહ ! કોઈ દોસ્ત બિરાદર યા

इरमाने मुस्तफ़ा: **عَلَى اللَّهِ قَائِلِي ظَنِّي وَاللَّهُ وَسَلَّمَ** जिसने मुज पर दस मर्तबा दुरदे पाक पण्डा अल्लाह तआला (उस पर सौ रहुमतें नाज़िल इरमाता है.

अज़ीज़ हमददी करने वाला भी न मिलेगा. जल्दी कीजिये ! जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के कदमों में गिर कर, अपने अज़ीज़ों के आगे हाथ जोड़ कर, अपने मा तहत्तो के पाउं पकड़ कर अपने इस्लामी भाईयों और दोस्तों से गिडगिडा कर, उन के आगे झुट को जलील कर के आज दुन्या में मुआफ़ी मांग कर आभिरत की इज़्जत हासिल करने की सख्य इरमा लीजिये. अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** के प्यारे हबीब **وَاللَّهُ وَسَلَّمَ** इरमाते हैं : **يَا'نِي** जो अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** के लिये आजिजी करता है अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** उस को बुलन्दी अता इरमाता है. (शु-अबुल इमान, जि. 6, स. 397, हदीस : 8229, दारुल कुतुबुल इल्मिया बैरुत) सब अेक दूसरे से मुआफ़ी मांग लीजिये और सब अेक दूसरे को मुआफ़ी भी कर दीजिये.

मैं ने मुआफ़ी किया

जिस के साथ लोग जियादा मुन्सलिक होते हैं उस से बन्दों की हक त-लफ़ियों के सुदूर का इम्कान भी जियादा होता है. मुज सगे मदीना **بَعْدَ عَفْوٍ** से वाबस्तगान की ता'दाद भी बहोत जियादा है, आह ! न जाने कितनों का मुज से हिल दुष जाता होगा ! ! मैं हाथ जोड़ कर अर्ज़ करता हूं : मेरी ज़ात से किसी की जान, माल या आबड़ को नुकसान

ફરમાને મુસ્તફા: صلى الله تعالى عليه واله وسلم: तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पण्डो तुम्हारा दुरद मुज तक पछोंयता है.

પહોંચ્યા હો વોહ ચાહે તો બદલા લે લે યા મુઝે મુઆફ કર દે, અગર કિસી કા મુઝ પર કર્ઝ આતા હો તો બેશક વુસૂલ કર લે અગર લેના નહીં ચાહતા તો મુઆફી સે નવાઝ દે. જો મેરા કર્ઝદાર હૈ મૈં અપની ઝાતી રકમેં ઉસ કો મુઆફ કરતા હૂં. **أَيُّ اءءلاءِ عَزَّ وَجَلَّ!** મેરે સબબ સે કિસી મુસલ્માન કો અઝાબ ન કરના. મૈં ને હર મુસલ્માન કો અપને અગલે પિછલે હુકૂક મુઆફ કિયે ચાહે જિસ ને મેરી દિલ આઝારી કી યા આઈન્દા કરેગા, મુઝે મારા યા આઈન્દા મારેગા, મેરી જાન લેને કી કોશિશ કી યા આઈન્દા કરેગા યા કે શહીદ કર ડાલેગા મેરે હુકૂક કે તઅલ્લુક સે મેરી તરફ સે હર મુસલ્માન કે લિયે આમ મુઆફી કા એ'લાન હૈ. **أَيُّ** મેરે પ્યારે પ્યારે અદલાહ ! તૂ મુઝ આજિઝ વ મિસ્કીન બન્દે કે અગલે પિછલે ગુનાહ મુઆફ ફરમા કર મુઝે બે હિસાબ બખ્શ દે.

યા અદલાહ **عَزَّ وَجَلَّ!**

સદકા પ્યારે કી હયા કા કે ન લે મુઝ સે હિસાબ
બખ્શ બે પૂછે લજાએ કો લજાના ક્યા હૈ

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

સબ ઈસ્લામી ભાઈ જો ઈસ વક્ત બૈનલ અક્વામી

इरमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى عليه واليه وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुर्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी.

तीन³ रोज़ा ईजतिमाअ में जम्अ हैं या म-दनी येनल व (INTERNET) के जरीअे दुन्या में जहां कहीं मुझे सुन रहे हैं या तमाम वोह ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहनें जो ओडियो या विडियो कसेट के जरीअे मुझे समाअत इरमा रहे हैं या तहरीरी बयान पढ रहे हैं वोह तवज्जोह इरमाअे के बन्दे का दुन्या में जो बडे से बडा हक तसव्वुर किया जा सकता है समज लीजिये मैं ने आप का वोह हक तलफ़ कर दिया है नीज ईस के एलावा भी जितने हुकूक तलफ़ किये हों अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये मुझे वोह सब के सब हुकूक मुआफ़ इरमा दीजिये बल्के अहसान बिल अहसान होगा के आइन्दा के लिये पेशगी ही मुआफ़ी से नवाज दीजिये. बराअे करम ! दिल की गहराई के साथ अक बार ज़बान से कह दीजिये : “मैं ने मुआफ़ किया”

रकमें लौटानी होंगी

जिस पर किसी का कर्ज़ आता है वोह युका दे और अगर अदाईगी में ताप्पीर की है तो मुआफ़ी भी मांगे, जिस से रिश्तत ली, जिस की ज़ैब काटी, जिस के यहां योरी

करमाने मुस्तफ़ा: علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बे शक येह तुम्हारे लिये तदारत है.

की, जिस का माल लूटा धन सब को धन के अमवाल लौटाने जरूरी हैं, या उन से मोहलत ले या मुआइ करवा ले और जो तकलीफ़ पड़ोयी धस की भी मुआइ मांगे. अगर वोह शप्स झौत हो गया है तो वारिसों को दे अगर कोई वारिस न हो तो उतनी रकम स-दका करे. अगर लोगों का माल दबाया है मगर येह याद नहीं के कीस किस का माले ना हक दिया है तब भी उतनी रकम स-दका करे या'नी मसाकीन को दे दे. स-दका कर देने के बा'द भी अगर अहले हक ने मुता-लबा कर दिया तो उस को देना पड़ेगा.

जो याद नहीं उन से किस तरह मुआइ करवाओं ?

जो धस्लामी भाई हुकूकुल धबाद के मुआ-मले में भौइजदा हैं और अब सोय में पड गये हैं के हम ने तो न जाने कितनों की हक त-लफ़ियां की हैं और कितनों की क दिल दबाया है, अब हम किस किस को कहां कहां तलाश करें ! तो अैसों की भिदमतों में अर्ज है के जिन जिन की दिल आजारी वगैरा की है उन में से जितनों से राबिता मुम्किन है उन से मिल कर या झोन पर या तहरीरी तौर पर राबिता कर के मुआइ तलाई की तरकीब बना लीजिये उन को राजी

इरमाने मुस्ताफ़ा: صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने किताब में मुज पर दुरद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस किताब में लिखा रहेगा फिरिश्ते उसके लिये ईस्तिग़फ़ार करते रहेंगे.

कर लीजिये और जो जो गाँव हैं या झौत हो चुके हैं, या जिन के बारे में याद ही नहीं के वोह कौन कौन लोग हैं तो हर नमाज के बा'द उन के लिये दूआअे मग़ि़रत कीजिये, म-सलन हर नमाज के बा'द इस तरह कहने का मा'मूल बना लीजिये : “या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मेरी और आज तक मैंने जिन जिन मुसल्मानों की उक त-लफ़ी की है उन सब की मग़ि़रत इरमा.” अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रहमत बहोत बडी है, मायूस न हों, “नियत साइ मन्ज़िल आसान.” إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ आप की नदामत रंग लायेगी और भीठे भीठे मुस्ताफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सटके हुकूकुल ईबाद की मुआफ़ी के अस्बाब भी करमे फ़ुदा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ से हो जायेंगे. युनान्ये

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सुल्ह करवायेगा

उतरते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :
 ओक रोज सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी
 आदम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़

इरमाने मुस्तफ़ा: صلى الله عليه وآله وسلم मुज पर कसरत से दुर्रदे पाक पण्डो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रदे पाक पण्डना तुम्हारे गुनाहों के लिये मञ्जिरत है.

इरमा थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तबस्सुम इरमाया. उजरते सय्यिदुना उमर फ़ाइके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर मेरे मां बाप कुरबान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने किस लिये तबस्सुम इरमाया ? एश़ादि इरमाया : मेरे दो² उम्मती अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दो² जानू गिर पड़ेंगे, अक अर्ज करेगा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस से मेरा इन्साफ़ दिला के इस ने मुज पर जुल्म किया था. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुदध (या'नी दा'वा करने वाले) से इरमाअेगा : अब येह बेयारा (या'नी जिस पर दा'वा किया गया है वोह) क्या करे इस के पास तो कोई नेकी बाकी नहीं. मजलूम (मुदध) अर्ज करेगा : “मेरे गुनाह इस के जिम्मे डाल दे.” इतना एश़ादि इरमा कर सरवरे काअेनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रो पडे, इरमाया : वोह दिन बहोत अजीम दिन होगा कयूँके उस वक्त (या'नी बरोजे क्रियामत) हर अक इस बात का उजरत मन्द होगा के उस का बोज हलका हो. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मजलूम (या'नी मुदध) से इरमाअेगा : देख तेरे सामने क्या है ? वोह अर्ज करेगा : अै परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं

इरमाने मुस्तफ़ा: **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जो मुझ पर एक मर्तबा दुरुद शरीफ़ पढता है अल्लाह तआला उसके लिये एक क़िरात अज्र लिखता है और एक क़िरात हुद पढाण जितना है.

अपने सामने सोने के बडे शहर और बडे बडे महल्लात टैभ रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं येह शहर और उम्दा महल्लात किस पैगम्बर या सिद्दीक या शहीद के लिये हैं? **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** इरमाओगा : येह उस के लिये हैं जो धन की कीमत अदा करे. **अन्दा अर्ज करेगा** : धन की कीमत कौन अदा कर सकता है? **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** इरमाओगा : तू अदा कर सकता है. वोह अर्ज करेगा : किस तरह? **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** इरमाओगा : इस तरह के तू अपने भाई के हुकूक **मुआइ** कर दे. **अन्दा अर्ज करेगा** : या **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ! मैं ने सब हुकूक **मुआइ** किये. **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** इरमाओगा : अपने भाई का हाथ पकडो और दोनों² एकट्ठे जन्नत में चले जाओ. फिर सरकारे नामदार, दो² आलम के मालिको मुप्तार, शहन्शाहे अजरार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरमाया : **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** से उरो और मप्लूक में सुलह करवाओ क्यूंके **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** भी बरोजे कियामत मुसल्मानों में सुलह करवाओगा.

(अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जि. 5, स. 795, उदीस : 8758, दारुल मा'रिफ़िल बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर दुइदें शरीफ़ पण्डो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा.

भीठे भीठे ईस्लामी ભાઈયો ! બયાન કો ઈખ્તિતામ કી તરફ લાતે હુએ સુન્નત કી ફઝીલત ઔર ચન્દ સુન્નતેં ઔર આદાબ બયાન કરને કી સઆદત હાસિલ કરતા હૂં. તાજદારે રિસાલત, શહન્શાહે નુબુવ્વત, મુસ્તફા જાને રહમત, શમ્એ બઝમે હિદાયત, મહબૂબે રબ્બુલ ઈઝ્ઝત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને જન્નત નિશાન હૈ : જિસ ને મેરી સુન્નત સે મહબ્બત કી ઉસ ને મુઝ સે મહબ્બત કી ઔર જિસ ને મુઝ સે મહબ્બત કી વોહ જન્નત મેં મેરે સાથ હોગા. (મિશકાતુલ મસાબીહ, જિ. 1, સ. 55, હદીસ : 175, દારુલ કુતુબુલ ઈલ્મિયા બૈરૂત)

સુન્નતેં આમ કરેં દીન કા હમ કામ કરેં

નેક હો જાએં મુસલ્માન મદીને વાલે

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“એક ચુપ હઝાર સુખ” કે બારહ હુરૂફ કી નિસ્બત સે બાત ચીત કરને કે 12 મ-દની ફૂલ

(1) મુસ્કરા કર ઔર ખન્દા પેશાની સે બાત ચીત કીજિયે (2) મુસલ્માનોં કી દિલજૂઈ કી નિચ્ચત સે છોટોં કે સાથ મુશ્ફિકાના ઔર બડોં કે સાથ મુઅદબાના

फ़रमाने मुस्तफ़ा: **عَلَى اللَّهِ قَوْلُهُ وَهُوَ سَلَّمَ** जब तुम मुर्सलीन पर दुइदे पाक पण्डो तो मुज पर भी पण्डो
 बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ.

लहजा रभिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सवाब कमाने के साथ साथ
 दोनों² के नजदीक आप मुअज़्ज़ज रहेंगे (3) यिल्ला
 यिल्ला कर बात करना जैसा के आजकल बे तकल्लुफ़ी
 में अकसर दोस्त आपस में करते हैं सुन्नत नहीं
 (4) याहे अेक दिन का बय्या हो अख़ी अख़ी निय्यतों
 के साथ उस से भी आप जनाब से गुफ़्त-गू की आदत
 बनाईये. आप के अफ़्लाक भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उम्हदा होंगे
 और बय्या भी आदाब सीभेगा (5) बात थीत करते
 वक्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंग्लियों के जरीअे
 बदन का मैल छुडाना, दूसरों के सामने बार बार नाक
 को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते
 रहना अख़ी बात नहीं, इस से दूसरों को घिन आती
 है (6) जब तक दूसरा बात कर रहा हो, धत्मीनान
 से सुनिये. उस की बात काट कर अपनी बात शुरुअ
 कर देना सुन्नत नहीं (7) बात थीत करते हुअे बल्के
 किसी भी हालत में कड्कहा न लगाईये सरकार
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी कड्कहा नहीं लगाया
 (8) जियादा बातें करने और बार बार कड्कहा लगाने
 से हैबत जाती रहती है. (9) सरकारे मदीना

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِبْرَاهِيمُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सौ बार दुरेदे पाक पण्डा उसके दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे.

“जब तुम किसी बन्दे को देओ के उसे दुन्या से बे रज्बती और कम बोलने की ने'मत अता की गई है तो उस की कुरबत व सोहबत इप्तिवार करो क्यूंके उसे हिकमत दी जाती है.” (सु-नने इब्ने माजह, जि. 4, स. 422, हदीस : 4101) (10) इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِبْرَاهِيمُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जो युप रहा उस ने नजात पाई.” (सु-ननुत्तिरमिजी, जि. 4, स. 225, हदीस : 2509) मिरआतुल मनाज्जह में है : हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي इरमाते हैं के : गुइत-गू की यार किसमें हैं : (1) जालिस मुजिर (या'नी मुकम्मल तौर पर नुकसान देह) (2) जालिस मुईद (3) मुजिर (या'नी नुकसान देह) भी मुईद भी (4) न मुजिर न मुईद. जालिस मुजिर (या'नी मुकम्मल नुकसान देह) से हमेशा परहेज जरूरी है, जालिस मुईद कलाम (जात) जरूर कीजिये, जो कलाम मुजिर भी हो मुईद भी उस के बोलने में अहतियात करे बेहतर है के न बोले और यौथी किसमें के कलाम में वक्त जाअेअ करना है. इन कलामों में इम्तियाज करना मुश्किल है लिहाजा जामोशी बेहतर है. (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 6, स. 464) (11) किसी से जब बात थीत की जाअे तो उस का कोई

इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पण्डेगा में क्रियामत के दिन उसकी शफ़ाअत करेगा.

सहीद मकसद भी होना यादिये और हमेशा मुजातब के ऊर्ध्व और उस की नफ़सियात के मुताबिक बात की जाये (12) बह ज़बानी और बे हयाई की बातों से हर वक्त परहेज कीजिये, गाली गलोज से इजतिनाब करते रहिये और याद रहिये के किसी मुसल्मान को बिला इज्जते शर-ई गाली देना हरामे कर्ह है. (इतावा र-अविय्या, जि. 21, स. 127) और बे हयाई की बात करने वाले पर जन्नत हराम है. हुजूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया: “उस शप्स पर जन्नत हराम है जो इंडूश गोई (बे हयाई की बात) से काम लेता है.” (किताबुस्समत मअडू मौसूअड अल इमाम इब्ने अबिदुन्या, जि. 7, स. 204, रकम: 325, अल मक-त-अतुल अस्रिय्या बैरूत) भाती यीत करने की तइसीली मा'लूमात हासिल करने और दीगर सेंकडों सुन्नतों सीपने के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 120 स-इहात की किताब “सुन्नतों और आदाब” उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते इस्लामी के म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सकर भी है.

सीपने सुन्नतों काइले में यलो लूटने रउमतों काइले में यलो
होंगी उल मुश्किलें काइले में यलो पाओगे अ-र-कतें काइले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
भोतियों वाला ताज	1	मुसल्मान की ता'रीफ़	24
पौफ़नाक डाकू	2	मुसल्मान को धूरना, डराना	25
जालिम को मोडलत मिलती है	4	हम शरीफ़ के साथ शरीफ़ और.....	26
औंधे मुंडु जहन्नम में	6	जो बुराई करे उस पर भी जुलूम न करो	28
आग की बेडियां	6	पराई कलम लौटाने के लिये सफ़र	28
मुफ़लिस कौन	7	बिगैर ईजाजत किसी की चप्पल पहनना कैसा ?	29
लरज उठो !	8	पुश्बू सूंधने में अेडतियात	31
आधा सेब	10	चराग बुजा दिया !	32
पिलाल का वभाल	11	भाग या जहन्नम का गढा	33
गेडूँ का पाना तोडने का उप्परी नुकसान	12	आधी भजूर	34
सात सो भा जमाअत नमाजें	14	शाही थप्पड का अन्जाम	35
अदाअे कर्ज में बिला वजह तापीर गुनाह है	15	झाड़के आ'जम की सादगी	36
गैरत मन्दी का तकाजा	16	बुरे खातिमे के अख्बाब	37
नेकियों के जरीअे मालदार	17	पुढ को किसी का "गुलाम" कहना कैसा ?	38
अख्वाह व रसूल को ईजा देने वाला	19	क्या डाल है ?	39
दिल छिला देने वाली पारिश	20	मुनाफ़िक ठहरेगा की वजाहत	41
जन्नत में धूमने वाला	22	मजलूम की ईमदाद करना जरूरी है	41
आका <small>المرادفعل على 1999</small> की बे ईत्तिहा आज़िजी	22	कब्र से शो'ले उठ रहे थे !	42
में ने तेरा कान मरोडा था	23	मुसल्मानों का गम	43

ઉત્વાન	સફલા	ઉત્વાન	સફલા
ચોર કા ગમ	44	મુઆફી માંગ લીજિયે	50
ચોરી કા અઝાબ	44	મૈં ને મુઆફ કિયા	52
મુખ્તલિફ હુકૂક સીખને કા તરીકા	46	રકમં લૌટાની હોંગી	54
ઝાલિમ કે મુખ્તલિફ અન્દાઝ કી નિશાન દેહી	47	જોયાદ નહીં (નસે કિસ તરહ મુઆફ કરવાએ?)	55
કિસી કી હંસી ઉડાના ગુનાહ હૈ	48	અલ્લાહ عزوجل સુલહ કરવાએગા	56
મઝાક ઉડાને કા અઝાબ	49	બાત ચીત કરને કે 12 મ-દની ફૂલ	59

ગુલ્મ કા અજામ

યેહ રિસાલા (ગુલ્મ કા અજામ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ **عز وجل** ને ઉદ્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ યા ઈ-મેઈલ) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેકટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409

e-mail : maktabahind@gmail.com